भूमिका

दलित समाज सदियों से शोषित और पीड़ित स्थिति में रहा है। जिसकी वजह से इसके अंदर की प्रतिकारात्मक सकती क्षीण हो गई थी। लेकीन उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध में महाराष्ट्र में हुये समाज सुधार आंदोलनों के चलते स्थितिया बदलने लगी। बुद्ध , फुले, शाहु और आंबेडकर की विचारधारा के चलते दलितों में आत्मसम्मान और स्वाभिमान जागृत हुआ जिसके चलते वे अपने हक और अधिकारों को प्रपट करने के लिए आंदोलित हुये। इन आंदोलनों में शुरुआती समय से ही महिलाएं भी आंदोलनों में भाग लेती रही है। लेकिन इतिहास और साहित्य में महिलाओं की भूमिका और उनके द्वारा किए गए कार्यों को न्याय नहीं दिया गया है। साहित्य में एक दो ही प्रयास इस दिशा में दिखाई देते है। आज वर्तमान में भी दलित आंदोलन सक्रिय है और इन आंदोलनों में महिलाएं भी बढ़ चड़ कर हिस्सा ले रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत शोध में नागपुर में सक्रिय दलित आंदोलनों में महिलाओं के योगदान और उनकी भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध 'दलित आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका: १९९० से वर्तमान तक' में कुल पाँच अध्याय है जिसमे प्रथम अध्याय 'दलित आंदोलन: महत्व एवं प्रासंगिकता' में सर्वप्रथम दलित शब्द की विभिन्न समाज शास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत व्याख्याये दी गई है। जिसके माध्यम से दलित शब्द की पृष्ठभूमि और इसके एक सामाजिक पहचान होने से जुड़े विवाद को स्पष्ट रूप से समझने प्रयत्न किया गया है। दलित शब्द को स्थापित करने के प्रयासों और इसके सामाजिक पहचान के रूप में न मनाने वालों के बीच वैचारिक मतभेद की स्थिति है। साथ ही इस अध्याय में दलित आंदोलन के दर्शन उसके महत्व और उसकी प्रासंगिकता पर भी बात की गई है।

दूसरे अध्याय 'दलित आंदोलन: एतिहासिक विश्लेषण' नागपुर और उसके आस-पास के क्षेत्रों में हुये दलित आंदोलनों के इतिहास और उसके महत्व को दर्शाया गया है। इस भाग की विशेषता यह है कि इस भाग नागपुर के संबंध में दलित आंदोलनों के विषय में दी गई जानकारी हिन्दी भाषी पाठकों के लिए प्रथम ही उपलब्ध हुई है। शोध क्षेत्र के रूप में नागपुर क्षेत्र की १९९० के पूर्व की दलित आंदोलनों से जुड़ी विशेष एतिहासिक घटनाओं को उनके महत्व के साथ प्रस्तुत किया गया है। इन तथ्यों को समझने पर यह स्पष्ट हो जाता है की दलित आंदोलनों के लिए नागपुर इतना महत्वपूर्ण क्यों है ? इसके साथ ही भारत में

१९९० में अपनाई गई भूमंडलीकरण की नीति का दलितों पर हुये प्रभाव को भी स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

तीसरे अध्याय 'दलित आंदोलन और महिलाएं' में हमने आंबेडकर के समय से दलित आंदोलनों में सक्रिय रही महिलाओं के योगदान और उनकी भूमिका को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है। इस भाग की भी विशेषता यह है कि मेरे संज्ञान में इस भाग में दी गई जानकारी हिन्दी भाषी पाठकों के लिए प्रथम ही उपलब्ध हुई है।

चौथा अध्याय 'प्रमुख दलित आंदोलन: एक अंतरदृष्टि' में नागपुर में चल रहे प्रमुक दलित आंदोलनों का परिचय दिया गया है। यह सारे आंदोलन अपने आप में महत्वपूर्ण है और दलित समाज की स्थिती और उसके दृष्टिकोण को दर्शाते है। यह आंदोलन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और धार्मिक क्षेत्रों में कार्यरत है। इनमें विशेषत: स्वायत महिला संगठनों की संख्या अधिक है।

पाचवा और अंतिम अध्याय 'वर्तमान दलित आंदोलनों में महिलाओं कि भूमिका' है। इस अध्याय में दलित आंदोलनों में महिलाओं द्वारा अनुभव किए जा रहे तथ्यों को जानकर उनका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। साथ ही उनका दलित आंदोलनों के प्रति दृष्टिकोण और दलित आंदोलनों में उनकी भूमिका को स्पष्ट करने का भी प्रयत्न किया गया है।

इस कृति को तैयार करने में सहायक मेरे शोध निर्देशक **प्रो. शंभु गुप्त** जी को में प्रथम धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके सानिग्ध में रहने और अपने शोध को पूर्ण करने का सुअवसर मिला। उनके द्वारा समय समय पर दिये गए सुझाव, मार्गदर्शन और स्नेह के चलते ही यह शोध निश्चित अवधि में पूर्ण हो सका। इन सभी बातों के लिए मैं आजन्म उनका ऋणी रहूँगा।

इसी तरह मैं अपने विभाग के प्रभारी संचालक **डॉ. सुप्रिया पाठक** जी और सहायक प्रोफेसर **डॉ. अवंतिका शुक्ला** जी के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिनका स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन मुझे सम्पूर्ण एम. फिल. वर्ष और शोध के बीच भी मिलता रहा। मैं अपने रूम पार्टनर जुगुल किशोर चौधरी, अमित कुमार और देविंदर का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिनका सहयोग को मैंने इन्हें डाट फटकार लगाते हुये ज़बरदस्ती से ले लिया। इसी तरह में विभाग के अन्य लोगों और सीनियर छात्रों का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ। इसके साथ में विभाग के सहायक अमोल, शुभांगी मैडम और कंचन मैडम को भी धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

इसी तरह मैं अपनी माँ को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जो हमेशा मेरे साथ खड़ी होकर मेरे द्वारा लिए गए निर्णयों का आदर करते हुये मेरा साथ देती है उसी तरह मैं अपने दोनों छोटे भाई शशिकांत और रजनीकांत तथा अपनी सुनबाई का भी आभारी हूँ। ये सब भी मेरा हमेशा साथ देते है। मैं अपनी करीबी दोस्त आम्रपाली जांभुळकर को भी धन्यवाद देना जिन्होने ने मेरा हौसला बनाए रखने (pre-submission के समय बहुत डाट पढ़ी थी, जिसकी वजह से मेरा आत्मविश्वास डगमगा गया था) और शोध सामाग्री इकट्ठा करने में मेरी मदद की। अंत मे मैं अपने पिता को याद करते हुये कहना चाहता हूँ कि मैं आपको हमेशा आपके अंदर मौजूद उस सामाजिक चेतना की भावना के कारण याद करता हूँ ,जिसकी वजह से मुझे अपने जीवन में प्रेरणा और ऊर्जा मिलती है।

श्रीकांत गोपीचंद बोरकर

स्त्री अध्ययन विभाग